शारीरिक अनुपात और स्वस्थता

डॉ. सुशील अग्रवाल

साधारणतया हम देखते हैं कि मनुष्यों के शारीरिक अंगों के विभिन्न अनुपात होते हैं। इसके अतिरिक्त कोई लम्बा, कोई मध्यम और कोई ठिगना। अनेक बार ज्योतिषी के समक्ष जातक के किसी अंग विशेष की स्वस्थता से संबन्धित प्रश्न भी आ जाता है। इसी प्रकार जातक के रूप–रंग आदि के बारे में भी प्रश्न आते रहते हैं। चिकित्सा ज्योतिष के योग निर्धारण में भी इसका बहुत महत्व है। ज्योतिषीय ग्रन्थों में इन प्रश्नों का फलित करने की क्या व्यवस्था है? यही इस लेख का विषय है ।

फलदीपिका के अनुसार

लग्ननवांशपतुल्यतनुः

स्याद्वीर्ययुतग्रहतुल्यतनुर्वा

चन्द्रसमेतनवांशपवर्णः

कादिविलग्नविभक्तभगात्रः ।।

अर्थात् जातक के शरीर का अनुपात या तो नवांश लग्न के स्वामी के अनुसार या जन्मकुंडली के सर्वाधिक बली ग्रह के अनुसार होता है । जातक का रंग चन्द्र के नवांश का स्वामी के अनुसार होता है। शरीर के अंगों का अनुपात भाव राशि के अनुसार होता है ।

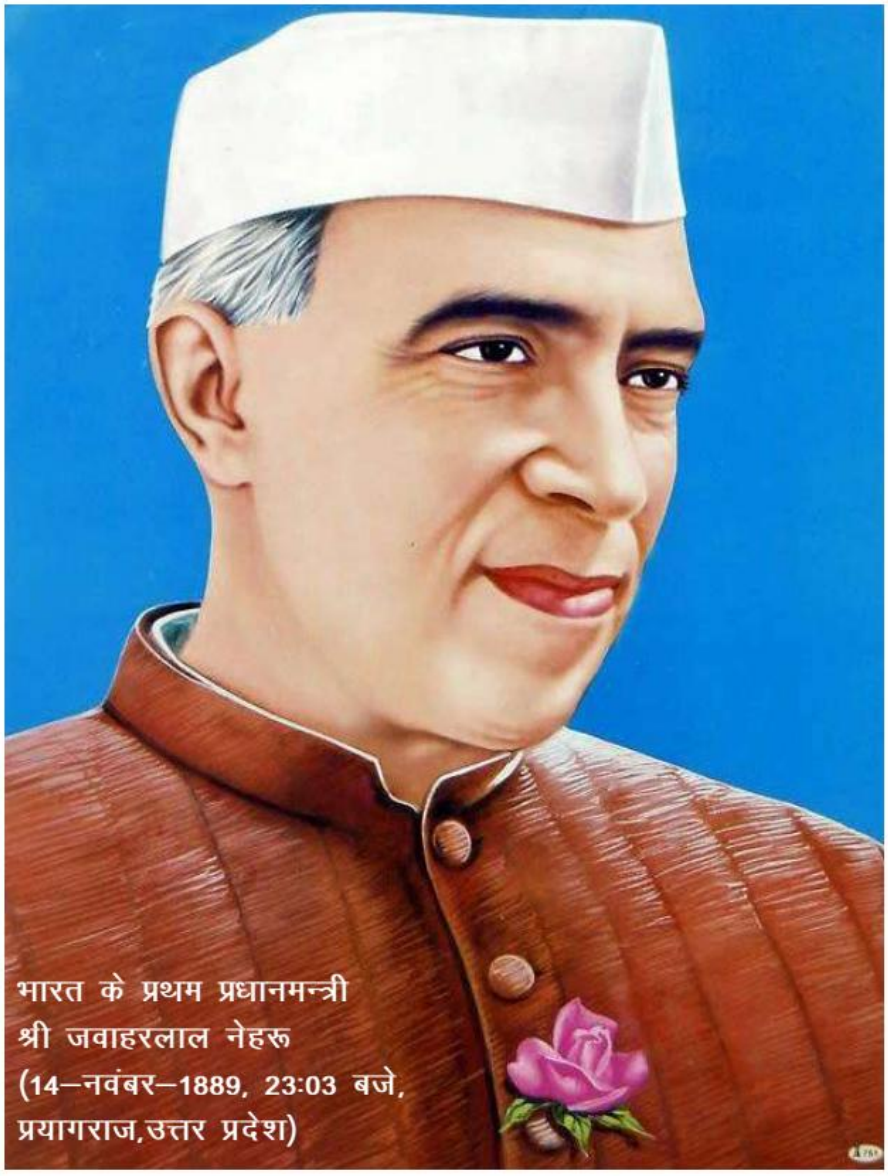

भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री
श्री जवाहरलाल नेहरू
(14–नवंबर–1889, 23:03 बजे,
प्रयागराज,उत्तर प्रदेश)

जन्मकुंडली

नवमांश कुंडली

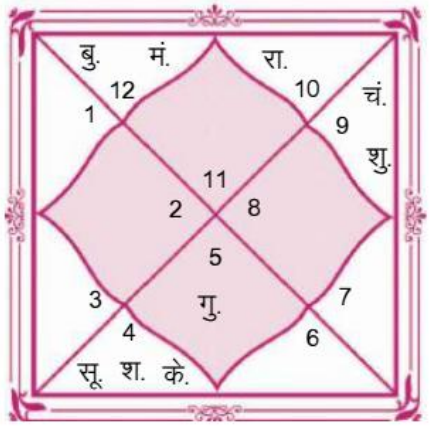

निम्न भाव विभिन्न शारीरिक अंगों का प्रतिनिधित्व करते हैं:

शिरोवक्त्रोरोहृज्जठरकटिवस्ति प्रजनन–

स्थलान्यूरू जान्वोर्युगलमिति जंघे पदयुगम्।

प्रथम –सिर, द्वितीय –चेहरा,

तृतीय –छाती, चतुर्थ – दिल,

पंचम –पेट, षष्ठ –कमर,

सप्तम –वस्ति, अष्टम –गुप्तांग,
नवम –जांघ, दशम –घुटने,

एकादश –पिंडलियाँ, द्वादश–पैर ।

शारीरिक अंगों का अनुपात जानने के लिए सर्वप्रथम राशियों का प्रकार जानना आवश्यक है जो सारावली के तृतीय अध्याय में वर्णित है:

ह्रस्वास्तिमिगोजघटामिथुनधनुःकर्किमृगमुखाश्च समाः ।

वृश्चिककन्यामृगपतिवणिजो दीर्घाः समाख्याताः ।।

एभिर्लग्नाधिगतैः शीर्षप्रभृतीनि वै शरीराणि ।

सदृशानि विजायन्ते युतगगनचरैश्च तुल्यानि ।।

आकार (उदय) राशि

ह्रस्व (लधु)	मेष, वृषभ, कुंभ और मीन
सम (मध्यम)	मिथुन, कर्क, धनु और मकर
दीर्घ (बड़ी)	सिंह, कन्या, तुला और वृश्चिक

बृहत्पाराशर के अनुसार ग्रहों कि निम्न रंग होते हैं:

रक्तश्यामो दिवाधीशो गौरगात्रो निशाकरः ।

अच्युच्चाङ्गो रक्तभौमो दूर्वाश्यामो बुधस्तथा ।।

गौरगात्रो गुरुर्ज्ञेयः शुक्रः श्यामस्तथैव च ।

कृष्णदेहो रवेः पुत्रो ज्ञायते द्वि जसत्तमः।।

सूर्य का रक्त–श्याम रंग, चन्द्रमा का गोरा रंग, मंगल का मध्यम शरीर तथा रक्त वर्ण, बुध का दूर्वा के समान श्याम रंग, गुरु का गोरा रंग, शुक्र का श्याम रंग और शनि का काला रंग होता है।

उपरोक्त शास्त्रीय सन्दर्भों के पश्चात, मान लीजिए कि आपको जातक के सिर के बारे में जानना है:

प्रथम भाव जातक के सिर का प्रतिनिधित्व करता है। मान लीजिए कि लग्न में मेष राशि है। उपरोक्त तालिका के अनुसार मेष राशि ह्रस्व (छोटी) राशि है। अब इसके स्वामी मंगल की स्थिति देखें। मान लीजिए कि मंगल मीन राशि में स्थित है जो ह्रस्व (छोटी) राशि ही है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि जातक का सिर छोटा होगा (ह्रस्व + ह्रस्व = ह्रस्व)। इसी प्रकार भाव द्वारा प्रतिनिधित्व करने वाले अंग का आकार निर्धारित करना चाहिए । जैसे – यदि एक ह्रस्व तथा दूसरी सम हो तो सम लेना चाहिए और यदि एक ह्रस्व तथा दूसरी दीर्घ हो तो भी सम लेना चाहिए ।

यदि यह जानना हो कि शरीर का वह अंग स्वस्थ और सुन्दर होगा या नहीं तो सम्बन्धित भाव में यदि शुभ ग्रह स्थित हों या वह भाव शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट हो और भावेश बली हो, तो वह अंग स्वस्थ व सुन्दर होता है।

लेख में दिये गये भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू के उदाहरण कुंडली से कुछ और स्पष्ट करते हैं :

लग्न में सबसे बलवान चन्द्र है और नवांश अधिपति शनि हैं। बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् के ग्रहगुणरूपाध्याय के अनुसार शनि दुबली तथा लम्बी देह वाला होता है। श्री नेहरु पतले थे और उनकी लम्बाई 1.78 मीटर थी। चन्द्र का नवांशपति गुरु है जो गौरवर्ण का प्रतिनिधित्व करता है जो श्री नेहरु का भी रंग था। इसी प्रकार शारीरिक अंगों के अनुपात और स्वस्थता का निर्धारण करने कि अनुशंसा की गयी है।

बी–301, सोम अपार्टमेंट्स,
सेक्टर–6, द्वारका, नयी दिल्ली
मो. 9810162371

राजेश्वर दाती जी महाराज

वशीकरण, ऊपरी बाधा, काम बंधन खोलना, पितृ दोष, कालसर्प दोष शांति, ग्रह बाधा शांति, तांत्रिक अनुष्ठान, जाप, हवन तथा कर्मकांड एवं महामृत्युंजय एवं गायत्री जाप के लिए संपर्क करें।

फोन : 9212120817, ए–32–ए, जवाहर पार्क, देवली रोड, नयी दिल्ली–62